BA. III, Paper V
SOCIOLOGY
M.A. JOHN

TALCOTT PARSONS
(टालकाट पारसन्स)

INTRODUCTION (परिचय)

Parsons एक अमरीकी समाजशास्त्री हैं। उसका सम्बन्ध एक सम्पन्न परिवार से था। बचपन से ही पारसन्स में विलक्षण प्रतिभा के दर्शन होने लगे थे। समाजशास्त्र में पारसन्स का योगदान सामाजिक क्रिया का सिद्धान्त है। पारसन्स से पहले भी विचारकों ने सामाजिक क्रिया पर चिन्तन किया था लेकिन पारसन्स के विचार अधिक वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय हैं। उसके विचारों का अभी पूरी तरह मूल्यांकन नहीं हो पाया है। आशा है आगे आने वाली पीढ़ी इसका मूल्यांकन करेगी। समाजशास्त्र के क्षेत्र में Parsons को सामाजिक क्रिया सम्प्रदाय का संस्थापक माना जाता है।

पारसन्स ने प्राणीशास्त्र (Biology) में स्नातक की उपाधि ग्रहण की, वाल्टन हैमिल्टन से सम्पर्क में आने के कारण, अर्थशास्त्र में उसकी रुचि बढ़ी, फिर अर्थशास्त्र में स्नातक की उपाधि ग्रहण की। 1929 से 1931 तक London School of Economics में उसका सम्पर्क Hobhouse तथा Malinowski जैसे विद्वानों से हुआ। जिसका प्रभाव उसके विचारों पर भी पड़ा। यहीं से समाजशास्त्र में उसकी रुचि बढ़ी और 1936 से 1944 तक Parsons ने Harward university में समाजशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। इसी बीच उसने Max Weber की "The Protestant Ethic

and Spirit of Capitalism का अंग्रेजी में अनुवाद किया। उसके प्रारम्भिक चिन्तन को Max Weber के विचारों ने भी प्रभावित किया है।
वास्तव में Hobhouse, Malinowski तथा Weber तीनों ही विचारकों का Parsons के विचारों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है।
Parsons द्वारा प्रस्तुत अवधारणाओं में सामाजिक क्रिया की अवधारणा का विशेष महत्त्व है। Parsons के पहले भी दूसरे बहुत सारे विद्वानों ने सामाजिक क्रिया की विवेचना की थी लेकिन Parsons के विचार इनसे बिलकुल भिन्न हैं। उन्होंने सामाजिक क्रिया को अपने ढंग से परिभाषा प्रस्तुत करते हुए यह विचार दिया कि सामाजिक क्रिया को सामाजिक व्यवस्था एक इकाई समझना चाहिये। इसी को समझाते हुए उसने इस से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों को स्पष्ट किया है। 1937 से लेकर 195[illegible] के बीच सामाजिक क्रिया से सम्बन्धित उन्होंने जो विचार प्रस्तुत किये हैं उसमें समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन भी किये हैं।

सामाजिक क्रिया की मूल अवधारणा।

Parsons ने सामाजिक क्रिया को एक ऐसे व्यवहार के रूप में स्पष्ट किया है जो साधन और साध्य के तार्किक सम्बन्धों पर आधारित होता है तथा जिसके फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला परिवर्तन पहले की अपेक्षा अधिक तार्किक अथवा विवेकपूर्ण होता है।

Parson ने अपनी पूर्ण अवधारणा में चार महत्वपूर्ण तत्वों की चर्चा की है।

(1) कर्ता (Actor): किसी भी क्रिया के संचालन के लिये कर्ता आधारभूत तत्व है। एक सामाजिक प्राणी के रूप में व्यक्ति द्वारा की जाने वाली क्रियाएं दो प्रकार की होती है। एक प्राणी के रूप में तथा समाज का सदस्य होने के नाते। मनुष्य द्वारा की जाने वाली ये दोनों प्रकार की क्रियाएं उसके सामाजिक परिवेश से जुड़ी होती है। एक कर्ता के रूप में मनुष्य बहुत से सामाजिक मूल्यों से बंधा होता है और उन्हीं मूल्यों के आधार पर वह अपनी क्रिया के लक्ष्य का चयन करता है।

(2) लक्ष्य (Goal) किसी भी क्रिया में एक या अनेक लक्ष्यों का समावेश होता है। जो चेतन तथा अचेतन दोनों प्रकार के हो सकते हैं। जिनका निर्धारण समाज के मूल्य के अनुसार होता है। अर्थात सामाजिक मूल्य ही कर्ता के लक्ष्यों को प्रभावित करते हैं। ये लक्ष्य एक समय में अनेक हो सकते हैं। और इनकी प्रकृति एक दूसरे से अलग भी हो सकती है। और लक्ष्यों का निर्धारण परिस्थिति के अनुसार किया जाता है।

(3) परिस्थिति (Situation): Parson के अनुसार प्रत्येक सामाजिक क्रिया एक विशेष परिस्थिति में होती है। अर्थात कर्ता के सांस्कृतिक परिवेश, उसके अनुवांशिक विशेषताओं तथा कर्ता द्वारा अर्जित मानसिक स्थिति से है। वास्तव में यह वह परिस्थितियां है जिनमें कर्ता अपने लक्ष्यों तथा उन्हें प्राप्त करने के साधनों के बीच ताल मेल स्थापित करता है।

के साधन (Means) लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये किसी भी कर्ता द्वारा की जाने वाली क्रिया के लिये एक अथवा अनेक साधनों का योगदान आवश्यक है परन्तु परिस्थितियों की भिन्नता के कारण इन साधनों की प्रकृति भी अलग अलग हो सकती है। इसके अतिरिक्त, स्वयं कर्ताओं की भिन्नता के आधार पर भी साधनों की प्रकृति में भिन्नता आ जाती है। इस प्रकार सामाजिक क्रिया में उपयुक्त दोनों प्रकार के साधनों की भिन्नता के अनुसार क्रिया की प्रकृति में भी स्पष्ट अन्तर देखने को मिलता है।

क्रिया की संशोधित अवधारणा

इसे स्पष्ट करते हुए Parsons ने कहा कि सामाजिक क्रिया की अवधारणा को किसी विशेष व्यक्ति अर्थात् विशिष्ट कर्ता के लिये लागू नहीं किया जा सकता। सामाजिक क्रिया को सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। Parsons के अनुसार सामाजिक व्यवस्था सामाजिक क्रियाओं की एक संगठित प्रणाली है जिसमें अनेक कर्ताओं द्वारा की जाने वाली क्रियाओं का समावेश होता है। सामाजिक व्यवस्था किया सामाजिक व्यवस्था की तीन उप व्यवस्थाओं से प्रभावित होती है।

(a) सामाजिक क्रिया एवं प्रतिमान

(b) सामाजिक क्रिया तथा अन्य क्रिया व्यवस्थाएँ

(c) सामाजिक क्रिया तथा भूमिका व्यवस्थाएँ)

Scanned with CamScanner

अपने संशोधित रूप में Parsons ने सामाजिक क्रिया के अन्तर्गत पाँच तत्वों को विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना है, जो इस प्रकार हैं ① कर्ताओं की बहुलता ⓑ लक्ष्यों की अनेकता ⓒ साधनों की विविधता ⓓ परिस्थितियाँ ⓔ उन्मेरणा।

वास्तव में सामाजिक क्रिया और सामाजिक व्यवस्था परस्पर सम्बन्धित हैं।

—x—

Scanned with CamScanner